International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 09, September 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शेखावाटी लोक साहित्य का स्वरूप एवं वर्गीकरण

डॉ. वन्दना गजराज, हिन्दी विभाग
अपेक्स स्कूल ऑफ मानविकी एवं कला
अपेक्स विश्वविद्यालय जयपुर।

सांराश

किसी भी क्षेत्र के जनजीवन को चलाने के लिए एकांत के स्थान पर एक दुसरे से संपर्क जरूरी है और यह हम मानव विकास यात्रा की कहानी में देख सकते हैं क्योंकि प्रकृति और भूगोल भी आपस में सामन्जस्य बना कर गति करते आये है। इसी प्रकार मानव भी सामंजस्यवादी है। गति करना भी एक सहज प्रवृति है और ठीक इसी प्रकार राजस्थान की संस्कृति में भी शेखावाटी के योगदान को देखा जा सकता है यदि आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से देखा जाये तो शेखावाटी क्षेत्र राजस्थान का एक सम्पन्न इलाका है न केवल आज इतिहास में भी यह क्षेत्र सम्पन्न रहा है। राजस्थान को संस्कृति की दृष्टि से देखा जाये तो यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही अपनी भूमिका का निर्वाह करता रहा है। राजस्थान के लोकगीतों में भी इस क्षेत्र विशेष पर बहुत से गीत मिलते हैं। एक समय में यहां पर अनेक लोकगीतों का सृजन हुआ व अनेक लोकधुन भी बनी जिसने संपूर्ण प्रदेश के संगीत को नई दिशा दी। मानव जीवन की प्रसन्नता व झुंझलाहट या क्रोध व प्रेम या राग व विराग का लोकगीतों में सर्वोत्कृष्ट रूप दिखाई देता है। जनजीवन में व्यापक रहने वाली इच्छाएँ और आकांक्षाएं जितनी लोकगीतो से स्पष्ट होती हैं वैसी अन्यत्र दुर्लभ हैं। शेखावाटी लोक साहित्य एवं लोकगीतों की व्याख्या प्रस्तुत लेखन में की गयी है।

मुख्य शब्द – शेखावाटी, लोकगीत, नखरालो, संस्कृति, अनुभूति, आंकाक्षाएँ, पौराणिक।

प्रस्तावना

शेखावाटी लोक साहित्य को जनजीवन का दर्पण कहा जा सकता है। लोक साहित्य मानव के हृदय का उद्‌गार है साधारणतः लोग जो कुछ सोचते हैं और जिस विषय की अनुभूति करते हैं उसी का प्रकाशन उनके साहित्य में पाया जाता है। राजस्थान के शेखावाटी प्रदेश जिसके अन्तर्गत सीकर, झुंझनू, चूरू जिले आते हैं का लोक साहित्य भी अत्यन्त समृद्ध है। इसके अन्तर्गत लोकगीत, लोकगाथाएं, लोकनाट्य, लोक पहेलियां, प्रेमकथाएं और फडें आदि हैं। तीज, त्योहार, विवाह, जन्म और देव पूजन और मेले अधिकतर गीत लोक साहित्य का भाग हैं। ग्रामीण जनता विभिन्न उत्सवों और ऋतुओं में गीत गा–गा कर अपना मनोरंजन करती है। कहानियां सुनना भी उनका मन बहलानें का दूसरा साधन है। समय–समय पर चुभति हुई लोकोक्तियों और भाव भरे मुहावरों के प्रयोग से ग्रामीण जन अपनी भावनाओं और विचारों का प्रकाशन करते हैं। यह कुछ सूक्तियों के द्वारा भी किया जाता है। जिनका निर्माण जनता के अनुभव से होता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 09, September 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इसी प्रकार की अनुभूतियां कहीं अन्यत्र नहीं हो सकती। अतः शेखावाटी साहित्य को प्रमुखतया पाँच भागों में विभक्त किया जा सकता है।

1 लोक–गीत
2 लोक–गाथा
3 लोक–कथा
4 लोक कहावतें
5 पहेली

1 **लोक–गीत** – शेखावाटी के लोक साहित्य के अन्तर्गत लोकगीतों का स्थान प्रमुख है। जनजीवन में अपनी प्रमुखता एवं व्यापकता के कारण इनकी प्रधानता स्वभाविक है। लोक साहित्य के जिन विभिन्न भेदों का उल्लेख किया गया है उनमें सर्वाधिक लोकगीतों का उल्लेख है। ये गीत विभिन्न उत्सवो व ऋतुओं में गाये जाने वाले गीत हैं। इनका विभाजन मुख्यतः निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है।

1 संस्कारों की दृष्टि से
2 ऋतुओं और व्रतों की दृष्टि से
3 रसानुभूति की प्रणाली से
4 क्रियागीत की दृष्टि से
5 विभिन्न जातियों के प्रकार से

2 **लोक–गाथा** – लोकगीत वे गीत हैं जिनकी कथावस्तु प्रायः कुछ भी नहीं होती। गेमता ही उनका प्रमुख गुण है। लेकिन लोक गाथाओं में कथावस्तु की ही प्रधानता होती है। गेयता इसमें गौण होती है। आकार की दृष्टि से भी दोनो में भिन्नता पाई जाती है। लोकगीतों का आकार छोटा परंतु लोकगाथा का आकार कथानक के अनुसार बहुत बडा होता है लोकगीतों गीतीकाव्य और लोकगाथा को हम प्रबन्ध काव्य कह सकते हैं। शेखावाटी की प्रमुख लोक गाथाओं के अन्तर्गत तेजाजी की लोकगाथा, टोडरमल की लोकगाथा, नानी बाई रो मायरो, ज्यानी चोर की कथा, रामदेव की गाथा आदि हैं।

3 **लोक कथा** – लोक साहित्य में लोक कथाओं का प्रमुख स्थान है। ये अपनी अनन्यता और लोकप्रियता के कारण साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। माताएँ सुन्दर कहानियां सुनाकर अपने बच्चों को आनन्दित करती हैं। बालक इन कहानियों को सुनते–सुनते निंद्रा का आनन्द लेते हैं। मानव के जन्म के साथ ही लोककथा का जन्म माना जाता है। लोक में कहानी कहने की प्रथा सर्वाधिक प्राचीन है। प्राचीन युग से ही मानव ने अपनी अनुभूतियों को कथा के रूप में कहना

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 09, September 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रारंभ कर दिया। उसने अपने अस्पष्ट जीवन–दर्शन को भी लोक कथाओं के माध्यम से कहने का प्रयास किया। यह अभिव्यक्ति निम्न रूपों में हुई–

1 **पौराणिक कथाओं के रूप में**

2 **लोक कथाओं के रूप में**

शेखावाटी की लोक कथाओं में गद्यात्मकता और पद्यात्मकता का मिश्रण है। कथा के बीच–बीच में दोहो का प्रयोग इस प्रकार से किया जाता है कि इससे कथा का रस और सौन्दर्य अधिक बढ़ जाता है। शेखावाटी की लोक कथाओं मे नीति, प्रेम, कौतुहल, हास्य आदि विषयों पर रचित लोककथाएँ अधिक प्रचलित हैं।

4 **लोक कहावतें –** शेखावाटी क्षेत्र में प्रचूर मात्रा में लोक कहावतें भी हैं। जिनमें यहां की बोली के सरल रूप का प्रयोग किया गया है चूंकि ये कहावतें लोक में प्रचलित होती हैं अतः इनमें कई बार शब्दों का फेर बदल देखने को मिलता है।

मगर कहावत के मूल अर्थ में विशेष बदलाव नहीं होता। ये कहावतें भी अलिखित होने की वजह से मौखिक परंपरा पर ही जीवित रहती हैं। इन काहावतों से लोक साहित्य में समाज, संस्कृति और लोक व्यवहार का स्पष्ट दर्शन होता है। अनेकों एसी कहावतें है जिनसे कोई न कोई कथा जुडी रहती है। चूंकि कहानी विस्तृत होती है अतः संक्षिप्त में लोक कहावत प्रचलित हो जाती है। ये कहावतें लोगों के दैनिक जीवन में सहजता प्रदान करती हैं एवं शेखावाटी के तात्कालिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक जीवन का संक्षेप में वर्णन करती है।

5 **पहेली** – शेखावाटी क्षेत्र में पहेली को 'पहाली' कहा जाता हैं। लोक जीवन में एक दूसरे की बौद्धिक क्षमता देखने के लिये पहेलियों का उपयोग किया जाता है। शेखावाटी के लोक साहित्य में प्रचूर मात्रा में पहेलियाँ पाई जाती है। यह पहेलियां विशेषकर बच्चों में प्रचलित होती हैं परंतु बाकी समाज में भी दैनिक जीवन में प्रयोग में ली जाती हैं।

एक और बच्चों में मनोरंजन और उल्लास के रूप में इस क्षेत्र में बहुत सी पहेलियां है वहीं दूसरी ओर यह उनके कल्पनाशीलता और सृजनात्मकता को भी बढावा देती हैं। पहेलियां बच्चों के साथ–साथ बडों में भी प्रचलित हैं। इसी प्रकार लोक–संस्कृति में पहेलियां समृद्ध होती रहती हैं। चारित्रिक विशेषताओं के आधार पर शेखावाटी में पहेलियों को सात भागों में बांटा गया है जो निम्न है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 09, September 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

1 बाल पहेलियां
2 मनोरंजक पहेलियां
3 प्रकृति से संबधित पहेलियां
4 धार्मिक पहेलियां
5 जाति व लिंग आधारित पहेलियां
6 समस्यात्मक पहेलियां
7 दैनिक जीवन की पहेलियां

1 पहेली – ''धोली घोडी झाबरों पूंछ।

न आवे तो दादा ने पूछ।''

श्रेणी – प्रकृति से संबधित (मूली)

2 पहेली – ''छोटी सी तलाई।

जी में न्हावै गुलियो नाई।''

श्रेणी – दैनिक जीवन की पहेली (उत्तर–गुलगुला) शेखावाटी की एक मिठाई होती है जो गुड और आटे से बनाई जाती है।

शेखावाटी लोकगीतों का स्वरूप – गान मनुष्य के हृदय के लिये स्वभाविक है। सुख हो या दुःख मनुष्य गाये बिना नहीं रह सकता है। सुख में मानव उल्लासित होता है तो दुःख में गाकर दुःख को भूलता है। आदिकाल से मनुष्य हृदय गाता आया है। आदिम मनुष्य के इन्हीं गानो का नाम लोकगीत है। शेखावाटी क्षेत्र में देखा जाये तो पूरे इलाके में एतिहासिक पृष्ठ भूमि में मेहनत और सृजन आधारित लोकगीत हैं। सामंतकाल के दौरान संगीत की धार गुणगान की तरफ झुकी हुई नजर आती है पर यह केवल आजीविका के रूप में राजाओं और ठाकुरों का गुणगान करना उनका पेशा था।_राजाओं की वंशावली गाने वालों में भाट, चारण और ढ़ाडी प्रमुख थे। यह संगीत दो सामान्तर धाराओं में विकसित हुआ – एक संगीत आजीविका के लिये जो सामंतो का गुणगान करते थे। और दूसरा संगीत जीवन के लिये। जीवन का संगीत स्वतंत्र और मौलिक था। अतः वह आज भी जिन्दा और प्रासंगिक है।

शेखावाटी के लोकगीतों के बारे में कहा जा सकता है कि यह संगीत की एक ऐसी परम्परा का पोषक व सृजक है जो अतीत व वर्तमान को जोडती हुई जीवन के भावों के साथ समन्वय स्थापित करती है। चुकि गीत समय के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं। फैशन के इस दौर ने यहां के गीतों

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 09, September 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

को भी प्रभावित किया है मगर जीवन के साथ समीपता होने के कारण लोगों ने इसे संजोकर रखा है। यह लोकगीत संस्कृति व सभ्यता के मूल्यों की स्थतियों के वाहक हैं।

शेखावाटी लोकगीतों का वर्गीकरण – शेखावाटी के लोकगीत प्रचूर मात्रा में मिलते हैं। समय–समय पर यह परिवर्तित–परिवर्धित भी होते रहतें हैं और साथ ही लोक रूचि के अनुसार नये गीतों का उदय और पुराने गीतों का विनाश भी होता रहता है। लोकगीत समाज के बडे हिस्से द्वार मन के भावों को अभिव्यक्त करते हैं। मन के अन्दर से आई हुई निर्मल भावना जो सुख और दुःख किसी भी भाव में हो सकती है परंतु लोक में प्रचलित है और जिसे वह अपने जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा मानता है। क्योंकि लोक में स्वतंत्र अभिव्यक्ति ही प्रचलित होती है। शेखावाटी के सामुहिक रूप से गाये जाने वाले गीत भी। अतः गाने वालों की संख्या के आधार पर इनका वर्गीकरण संभव नहीं है। लोकगीतों का विभाजन उनकी प्रकृति के आधार पर ही किया गया है।

1 धर्म संबधी लोकगीत
2 कार्य संबधी लोकगीत
3 मनोरंजन संबधी लोकगीत
4 स्थितिपरक लोकगीत
5 प्रकृति संबधी लोकगीत
6 विद्रोह के लोकगीत

इस विभाजन के आधार पर लोकगीतों का पर्याप्त भंडार है जो प्रेम, विरह, श्रद्धा, आकर्षण, करूणा, कोमलता आदि के भावों से भरे हुए हैं। किसान मजदूर और विरहणी से लेकर पूरे लोकजीवन का चित्रण लोकगीतों के माध्यम से किया जा सकता है।

1 **धर्म संबंधी लोक गीत** – धर्म संबंधी लोकगीतों में धार्मिक पर्व, संस्कार व व्रत–त्योंहारों के लोकगीत आते हैं। शेखावाटी में हिन्दु–मुसलमान व जैन धर्म के लोग अधिक निवास करते हैं। इन धर्मो के रीति–रिवाजों में लोकगीतों का अत्यधिक महत्व है क्योंकि धर्म आधारित लोकगीत किसी एतिहासिकता या मिथक पर आधारित होते हैं। अतः जनता के सामने यहां भी चुनाव का विषय रहता है। जनता भी उन्ही लोकगीतों का चुनाव करती है जो सामाजिक स्थिति के निकट हों। ये गीत उपदेशात्मक व नैतिकता प्रदान होते हैं। चुनाव के रूप में होली के अवसर पर लोग इस धमाल का ज्यादा प्रयोग करते हैं– '' राजा बलि के दरबार में रची रे होली रे'' क्योंकि वे बलि के सुख की कल्पना करके सुख की धारा में ढूब जाते हैं। धर्म संबधी लोकगीतों में शेखावाटी में लोक देवताओं से संबधित गीत अधिक मिलते हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 09, September 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

2 **कार्य संबंधी लोकगीत** – शेखावाटी के अनेकों लोकगीत कार्यों पर आधारित होते हैं। यह गीत किसी विशेष अवसर पर न गाये जाकर विशेष कार्य के दौरान गाये जाते हैं। इसकी उत्पत्ति भी कार्यों से ही हुई है। जैसे मशहूर राजस्थानी गीत 'गोरबन्द' की उत्पत्ति पशु चराने के साथ हुई।

''लडली लूमा झूमाए म्हारो गोरबंद नखरालो

भैंसया न चरांवती मूं गोरबंद गुथ्यो''

खेत में कार्य के दौरान खेती से जुडे हुए लोकगीत की रचना हुई है। इसी प्रकार मजदूर द्वारा भी काम कर अपने काम से जुडे हुए लोकगीतों की रचना की जाती है। विभिन्न समुदायों के कामों को भी इन लोकगीतों में देखा जा सकता है।

3 **मनोरंजन के लोकगीत** – लोकगीत मन को हल्का कर देते हैं, शेखावाटी के लोकगीतों में अनेको एसे गीत मिलेगें जो मनोरंजन करते हों, परंतु इनका कोई न कोई गूढ अर्थ भी होता है। मनोरंजन प्रायः सामाजिक स्थिति पर निर्भर करता है। एक ही विषय किसी समाज के लिये हंसी बन जाता है तो किसी के लिये दर्द का कारण। यह पूरा क्षेत्र सामाजिक रूप से जातियों में विभाजित होने के साथ दो वर्गों में भी बंटा रहा है। चूंकि मनोरंजन का मतलब हमेशा हंसने से ही नहीं लिया जाता। मनोरंजन वह है जिसमें बिना भावना में बटे तटस्थ होकर स्थिति का बखान किया जा सके। इसी से हृदय में नई उमंग का संचार होता है।

''काल्यो कूद पड्यो मैले में

साईकल पंचर कर ल्यायो।''

यह गीत उल्लासपूर्वक गाया जाता है और साथ ही नृत्य भी किया जाता है।

4 **स्थितिपरक लोकगीत** – सामाजिक व धार्मिक जीवन से जुडे हुए तमाम लोकगीत कहीं न कहीं मनुष्य की मनःस्थिति को दर्शाते हैं। लेकिन लोकगीतों की बात की जाये तो इनमें लोगों की मनःस्थिति ही नहीं वरन समाज में प्रचलित प्रथा और जनमानस के सुख–दुःख का वर्णन भी किया जाता है। इन गीतों में एक तरफ संयोग से पूर्ण लोकगीतो का प्रचलन है। दूसरी तरफ विरह की वेदना यानी दो स्थितियों के बीच फंसा हुआ मन जो उनमें से दोनो स्थितियों को अपनाना चाहता है। दुविधा की स्थिति महिला के जीवन में अधिक होती है क्यों कि पति, सास, ससुर, माता–पिता, व संतान के बीच कभी–कभी चुनाव करने की स्थिति बन जाती है। शेखावाटी के वास्तिविक जीवन में देवर भाभी के रिश्ते के बिना लोकरंजन अधुरा है। प्रेम, झगडा, शिकायत, आदर सम्मान का पूरा वर्णन शेखावाटी लोकगीतों में देखने को मिलता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 09, September 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्थितिपरक लोकगीतों में स्थान विशेष से संबधित लोकगीत भी जीवन का अहम हिस्सा हैं। ये लोकगीत किसी विशेष स्थान की एतिहासिक, सांस्कृतिक छवि को लोक में प्रचारित करते है।

5 **प्रकृति संबधित लोकगीत** – शेखावाटी के प्रकृति संबधित लोकगीत अत्यधिक प्रसिद्ध हैं। ऋतु संबधी लोकगीतों में सबसे ज्यादा लोकगीत सावन व फाल्गुन से संबधित हैं क्योंकि जब सावन में बरसात अच्छी होती है तो फसल की प्रगति को देख किसान झूम उठता है और अनायास ही उसके दिल से हूक मचल उठती है– यही तो लोकगीत है। किसान खेत में जाकर हल जोतते हुए धारों में उसके मन की लहर गूंज उठती है–

''लाग्यो लाग्यो जेठ साढ कंवर तेजा रे

लग जो ई लाग्यो सावण भादवो.... ।''

उपरोक्त गीत में वह लोकदेवता तेजाजी का गाथा गाते है जो स्वयं भी किसान थे। इसी प्रकार प्रकृति से जुडे हुए लोकगीतों में पशु–पक्षियों का भी वर्णन मिलता है।

6 **विद्रोह के लोकगीत** – शेखावाटी क्षेत्र आजादी के पूर्व से ही किसान आंदोलन की भूमि रही है। स्वतंत्रता आंदोलन के समय भी यहां पर कई सक्रिय आंदोलन हुए हैं। यह आंदोलन मुख्य रूप से किसानों के द्वारा किये गये थे इसलिये लोक में इनका विशेष प्रभाव रहा है। लोकराम जाट द्वारा अजमेर की जेंल को तोडकर आंदोलनकारियों को छुडवाने की लोक कथा आज भी प्रसिद्ध है। इसी प्रकार करणीराम नामक किसान आंदोलन के नेता को उदयपुरवाटी में धोखे से मारने को लोकगीत में इस प्रकार गाया जाता है।

''मत जाईजे रे

करणी राम उदयपुरवाटी में''

(अर्थ – करणीराम उदयपुरवाटी में दुबारा मत जाना।)

अतः यह लोकगीत आगे के विद्रोह के लिये संदेश देता है कि सजग व सचेत रहना चाहिये नही तो धोखे से आपको भी मारा जा सकता है। शेखावाटी की भूमि के कण–कण में वीरता और शौर्य की छटा बिखरी पडी है एवं यही रूप लोकगीतों मे दिखाई देता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 09, September 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

निष्कर्ष – शेखावाटी के लोकगीतों की छटा निराली है यहां के लोकगीत एकरूपता व समरसता से भरे हैं। ये लोकगीत यहां के लोकजीवन को तो समृद्ध करते ही हैं साथ ही संपूर्ण राजस्थान के लोक वैभव में भी शेखावाटी की लोक संस्कृति को एक स्वायत्त धारा में स्थापित करते हैं।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि शेखावाटी की धरती लोकगीतों की गूंज से गुंजित होती है। और इसका न केवल राजस्थान में बल्कि भारत के लोक संस्कृति कोष में भी महत्वपूर्ण योगदान है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 संदीप कुमार मील – शेखावाटी की लोक संस्कृति –पृष्ठ – 11

2 कोमल कोठारी – राजस्थानी लोक साहित्य –पृष्ठ –77

3 राजस्थानी लोक साहित्य – पृष्ठ संख्या –49

4 उपाध्याय डॉ कृष्णदेव – लोक साहित्य की भूमिका – पृष्ठ सं .26

5 संदीप कुमार मील – शेखावाटी की लोक संस्कृति – पृष्ठ सं 48

6 श्री गोविन्द अग्रवाल – राजस्थानी लोक कथाऐं – पृष्ठ सं 11

7 श्री गोविन्द अग्रवाल – राजस्थानी लोक कथाऐं – पृष्ठ सं 12